ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 103-104

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

पलटी (फिलप) कक्षा : कोरोना काल में शैक्षिक गुणवत्ता की नई उम्मीद

1. ज्योति
2. डॉ0 समर बहादुर सिंह

1. शोध अध्येत्री, 2. एसो0 प्रोफेसर– टीचर ऐजुकेशन विभाग, टी0डी0पी0जी0 कालेज, जौनपुर, (वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर) (उ0प्र0), भारत

Received- 10 .02. 2022, Revised- 14.02 2022, Accepted - 19.02.2022 E-mail: jyotitiwari100100@gmail.com

सारांशः – *शैक्षिक वातावरण के इस विषम परिस्थिति में विद्यार्थियों के हितों एवं विश्व के भविष्य के लिए ऐसी नवाचारी क्रांति की आवश्यकता है जो शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्यों को पूर्ण करे। पलटी कक्षा एक ऐसी ही नवाचारी क्रांति है जिसमें अध्यापक की भूमिका, अभिभावक सन्तुष्टि, पारदर्शी कक्षा वातावरण मे समर्थ है जिसमें परम्परागत, गैर परम्परागत प्रणाली का ऐसा संगम है जो इस परिस्थिति में एक उम्मीद की किरण है। जिसमे सूचना व पाठ्य वस्तु कक्षा से बाहर (घर पर) तथा अभ्यास व अनुप्रयोग शिक्षक के समक्ष कक्षा कक्ष मे किया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाँचों स्तम्भ – पहुँच, गुणवत्ता, समता, सामर्थ्य तथा जवाबदेही का यह समुचित पालन करने वाली प्रविधि है।*

कुंजीभूत शब्द– शैक्षिक वातावरण, विषम परिस्थिति, नवाचारी क्रांति, सार्वभौमिक उद्देश्यों, परम्परागत प्रणाली।

क्या है पलटी (लिप) कक्षा –पलटी कक्षा ब्लेण्डेड अधिगम का एक प्रकार है। पलटी कक्षा एक ऐसी नवीन सृजनात्मक तकनीक है जिसमें सूचना एवं पाठ्य सामग्री कक्षा से बाहर घर पर उपलब्ध करायी जाती है, तथा अनुप्रयोग, विश्लेषण, अभ्यास तथा मूल्यांकन शिक्षक के मार्ग दर्शन मे कक्षा मे किया जाता है। अप्रत्यक्ष रूप से 1993ई0 मे एलिसन किंग द्वारा इस प्रणाली का प्रादुर्भाव माना जात है जो कि पीयर अधिगम के आधारशिला पर 1997ई0 मे और विकसित हुआ। पलटी (लिप) कक्षा शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 2000ई0 मे जे0 पेश्ले द्वारा किया गया। यह पीयर अधिगम से अभिप्रेरित प्रविधि है, जिसमें जब छात्र कक्षा में शंका समाधान व सम्प्रत्यय निर्माण, समस्या समाधान हेतु आता है तो उसका सामाजिक सर्वदैषिक विकास सहयोगात्मक – सामाजिक रूप से सम्भव हो जाता है।

कैसे करें अध्यापन –

01. सूचना सामग्री प्रेषण तथा परिचर्चा/अनुप्रयोग काल की पर्याप्त योजना व समयसारिणी का निर्माण करें।
02. सूचना प्रेषण हेतु समुचित विषय वस्तु का निर्माण करें।
03. पाठ्य सामग्री के निदेशों व विषय सामग्री का उचित रूप से प्रत्येक छात्र को प्रेषित करें, वह चाहे आन–लाईन माध्यम से हो या आफ–लाईन माध्यम सें, ज्ञान की पहुँच प्रत्येक विद्यार्थी तक उसके घर पर सुनिश्चित करें।
04. सूचना सम्प्रेशण के बाद उचित समयान्तराल पर कक्षा में सामूहिक रूप से सभी छात्रों की सहभागिता सुनिश्चित कर समूह परिचर्चा, प्रश्नोत्तरी, ब्रेनस्ट्रॉमिंग, कार्यशाला, प्रयोगशाला आदि माध्यमों से उनके संशयों का निराकरण, ज्ञान का वास्तविक सम्प्रत्यय निर्माण, ज्ञान का विश्लेषण, संश्लेषण, अनुप्रयोग, मूल्यांकन कर नवीन ज्ञान का सृजन करें, व संज्ञानात्मक मनोसामाजिक, भावात्मक, दैहिक, चारित्रिक व मूल्य परक अवधारणा विकसित करती है।
05. छात्रों का मूल्यांकन करने के साथ साथ उनसे प्रतिपुष्टि प्राप्त कर आगे की कार्य प्रणाली की योजना बनायी जाती है।

पलटी (लिप) कक्षा की उपयोगिता –पलटी (लिप) कक्षा की निम्नलिखित उपयोगिता उल्लेखनीय है–

01. शिक्षा की पहुँच को बढाना एवं मुक्तात्मक शिक्षा को बढावा।
02. सक्रिय अधिगम एवं पारदर्शी वातावरण।
03. समुह, सहयोगात्मक अधिगम परिवेश।
04. निरन्तर प्रतिपुष्टि, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन।
05. स्वतन्त्र, स्वगतिक एवं सर्वदैशिक विकास।
06. आत्म सम्प्रत्यय एवं स्वअधिगम हेतु पर्याप्त समय।
07. शिक्षा मे परम्परागत एवं गैर परम्परागत माध्यम का समन्वय।
08. उपरोक्त प्रविधि गुणवत्ता पर शिक्षा को बढावा देकर छात्रों को ज्ञान का सृजनकर्ता बनाने मे विशेष योगदान देती है।
09. इस प्रविधि मे समता व समानता का पूर्ण परिपालन होता है।
10. NPE 2000 के उद्देश्यों के अनुरूप यह एक अत्यन्त उपयोगी प्रविधि है।

क्या रखें सावधानी–निम्नवत सावधानियों रखकर पलटी (लिप) कक्षा को और अधिक छात्रोंपयोगी बनाया जा सकता है–

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

01. विषय सामग्री को छात्रोंनुरूप बनाना।
02. कक्षा के बाहर तथा भीतर पर्याप्त समय सारिणी का अनुपालन करना।
03. शिक्षक के समक्ष परिचर्चा काल में सभी छात्रों की सहभागिता एवं सक्रियता सुनिश्चित करना।
04. सामग्री तथा मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय हो।
05. मुद्रित तथा अमुद्रित सामग्री गुणवत्तापूर्ण हो।
06. सामग्री की पहुँच प्रत्येक छात्र तक सुनिश्चित की जाए।
07. छात्रों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कर संवर्धक प्रतिपुष्टि प्राप्त की जाए।
08. प्रयुक्त माध्यम की प्रत्येक छात्र तक की पहुँच को सुनिश्चित किया जाए।
09. आधुनिक वैश्विक तथा सार्वभौमिक परिप्रेक्ष्य मे उचित वातावरण व आवश्यकतानुरूप उद्देश्य संवर्धन किया जाए।
10. शिक्षकों तथा अभिभावकों की विशिष्ट जवाबदेही सुनिश्चित की जाए।

कुछ बाधायें –पलटी (लिप) कक्षा की सफलता मे प्रमुख बाधायें निम्नवत है–

01. डिजिटल डिवाइड
02. दूर दराज के छात्रों तक पहुँच
03. सामग्री की विषय विशेषज्ञता
04. अप्रषिक्षित षिक्षक
05. अपर्याप्त बजट
06. संसाधन आपूर्ति बाधा
07. स्मार्टफोन इण्टरनेट समस्या
08. अभिभावक की नीरसता
09. उचित निर्देशन–परामर्श का अभाव
10. अभिभावक–शिक्षक का जवाबदेह न होना

सामग्री संग्रहण–पलटी (लिप) कक्षा में मुख्यतः दो प्रकार की सामग्री का प्रयोग किया जाता है–

01. कक्षा से बाहर (घर पर)

– मुद्रित सामग्री
– प्रिंट रिच सामग्री
– किताबें, नोट्स
– तथा अन्य आवश्यक प्रिंट आउट।

– अमुद्रित सामग्री
– ई–अधिगम सामग्री
PDF, PPT, Vedio, Audio
आन–लाईन मीटिंग, क्विज व ई–सामग्री आदि

02. शिक्षक के समक्ष (कक्षा में)

– समूह परिचर्चा
– मस्तिष्क उद्वेलन– अनुप्रयोग, प्रोजेक्ट व सृजनात्क
– पीयर, अनुदेशन
– वाद विवाद एवं संशय समाधान
आदि सम्प्रेषणात्मक तकनीकी

– मूल्याकन सम्बन्धी प्रश्नीकरण
कार्य, टास्क आदि क्रियात्मक
तकनीकी

निष्कर्ष – अन्ततः हम कह सकते है कि चाहे कोरोना काल हो या सामान्य परिस्थिति पलटी कक्षा एक अत्यन्त उपयोगी तकनीक है। जिसमें हम पराम्परागत तथा गैर–परम्परागत माध्यमों का समावेषन करते है। प्रत्येक छात्र तक ज्ञान की पहुँच बढाते है। गुणवत्तापूर्ण तथा भविष्य उपयोगी ज्ञान का सृजन कर बालक का सर्वदैशिक व सार्वभौमिक विकास करने मे सक्षम हो सकते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अल्वरेज, बी (2011) : "लिपिंग द क्लासरूम होमवर्क इन क्लास," इण्टरनेशनल जर्नल आफ एजुकेशन रिसर्च रिब्यू।
2. गैने, राबर्ट (1970) : "द कण्डीशन आफ लर्निंग" हाल्ट बेन्सटन न्यूयार्क।
3. जैनुद्दीन, जेड0 (2014) : "इन्हेन्सिग कोलैबरेटिव लर्निंग इन लिप्ड क्लासरूम" आस्ट्रेलियन जर्नल आफ बेसिक एण्ड अप्लाइड साइन्स।
4. बेन्जमिन ब्लूम (1956) : "टेक्सोनामी आफ एजुकेशनल आब्जेक्टिव" हैण्डबुक डेविड एम.सी.के. न्यूयार्क
5. मॉर्को रोनयेती (2010) : "यूजिंग वीडियों लेक्चर टू मेक टीचिंग मोर इन्टरेक्टिव" इण्टरनेशनल जर्नल आफ एमर्जिग टेक्नोलॉजी एण्ड लर्निंग।

*****